Reserach Scholar: Amreen Ali
Supervisor: Prof. Indu Virendra
Department: Hindi
Title: Hindi HINDI UPANYASON MEIN CHITRIT RAJNEETIK PARIVESH EVAM MANAVIYA MOOLYON KA ADHYAYAN (1980-200)

संक्षिप्त शोध सार

हिंदी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना का उद्भव स्वतंत्रतापूर्व से ही होने लगताहै। स्वतंत्रतापूर्व लिखे गए उपन्यासों में औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना दिखाई देती है। विचारधारात्मक रूप से भी राजनीतिक उपन्यासों की जमीन इसी काल में तैयार होती है। सत्ता तंत्र और उसके निहितार्थ सही मायने में इसी युग में सामने आते हैं। भारतीय राजनीति का मुख्य चरित्र लोकतांत्रिक है किंतु यह लोकतांत्रिकता किस तरह शक्ति और पूंजी के समीकरण से तैयार होती है

समकालीन राजनीतिक उपन्यास अपने चरित्रात्मक रूप में काफी जटिल और संश्लिष्ट दिखाई पड़ते हैं। स्वातंत्र्योत्तर राजनीति का पूरा चेहरा इस युग में आकर बदल जाता है। लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण इस युग में काफी तेजी से होता है। अवसरवादी राजनीति, सांप्रदायिकता और आतंकवाद जैसी गंभीर समस्याओं को कम करने के स्थान पर उसे समाज में स्थापित कर राजनेताओं ने केवल सत्तापरक राजनीति को बढ़ाया है। विमर्श केंद्रित, जाति केंद्रित और ध्रुवीकरण केंद्रित राजनीति इसी युग में खुलकर सामने आती है। लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से जहां दलितों एवं वंचितों को सत्ता मिलना एक उज्ज्वल पक्ष है, वहीं दूसरी ओर राजनीति का पूरा चेहरा लोभ और शक्ति के समीकरणों में उलझा हुआ दिखाई देने लगता है।

भूमंडलीकरण के बाद के काल को हम भारतीय राजनीति का नया चेहरा कह सकते हैं। आर्थिक बदलाव के अतिरिक्त बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद सांप्रदायिकता का उदय, पूंजी का सीधे तौर पर लोकतंत्र में हस्तक्षेप, बाजार केंद्रित संस्कृति का उदय और तकनीक अथाह विकास ने राजनीति को उस रूप में रहने ही नहीं दिया जिस रूप में उसकी परिकल्पना स्वतंत्रता के समय की गई थी। यह राजनीति पूंजीवादी संस्कृति के अनुरूप विकसित होती हुई राजनीति दिखाई पड़ती है।

समकालीन उपन्यासों में चित्रित राजनीति पेशे के रूप में उभर कर सामने आती है और इस कारण सामाजिक रूप से मानवीय मूल्यों का इस राजनीति में कोई स्थान नहीं रह पाता है। यह राजनीति लोक कल्याण के मार्ग से भटककर लोभ और स्वार्थ की राजनीति के रूप में परिणत हो गई है। यही कारण है कि इस काल के उपन्यासों में काफी जटिल चरित्र दिखाई देते हैं जो किसी प्रकार के आदर्श को नहीं मानते। उनका जन्म यथार्थ की गहरी भूमि से हुआ है। भाषिक तौर पर भी इन उपन्यासों में नई शिल्प प्रविधि का प्रयोग दिखाई देता है। इन उपन्यासों में प्रतिरोध की भाषा का मुख्य स्वर है। भाषिक तौर पर व्यंग्यात्मक शैली में ही अधिकतर उपन्यास राजनीति पर कटाक्ष करते हुए दिखाई देते हैं। इन उपन्यासों में वाचिक के साथ-साथ आंगिक भाषा का भी सफल प्रयोग हुआ है।